सत्संग महिमा

कर के जन्म सुधार सत्संग दो घड़ियां ।। टेक।।

ए सत्संग सकल सुख दाता, बिन सत्संग विवेक न आता।
भक्त मुक्त भंडार, सत्संग दो घड़ियां ... ...

सत्संग में जो जन आवे, सुने विचारे अमल कमावे।
जग से रहे उदास, सत्संग दो घड़ियां ... ...

पारस – परसा लोहा होवे, कंचन कर मल सगरी धोवे।
एह संगत दी कार, सत्संग दो घड़ियां ... ...

बाल्मीकि और नारद आदि, स्वपच ऋषि सत्संग प्रसादी।
उतरे भवजल पार, सत्संग दो घड़ियां ... ...

''दास'' कहे सत्संग बिन जीना, जैसे शहर बीच नाबीन।
धक्के मिलन हज़ार, सत्संग दो घड़ियां ... ...

तर्ज़ – भारत में फिर से आ जाना ... ...

सत्संग में, हां सत्संग में आना चाहिये।
मानुष जन्म को पाकर, हां सत्संग में।। टेक।।

अरे हां सत्संग है सार जग में, अरे हां करता सुधार जग में।
धोखा न खाना चाहिये, मानुष जन्म ... ...

अरे हा सत्संग है भारी तीर्थ, अरे हां जहां जाके मिलती सद्गति।
मन को नहलाना चाहिये, मानुष जन्म ... ...

अरे हां सत्संग अमृतसर है, अरे हां जो पीवे होय अमर है।
अमृत को पाना चाहिये, मानुष जन्म ... ...

अरे हां कहे "दास" मन में धारो, अरे हां सत् और असत विचारो।
भव पार जाना चाहिये, मानुष जन्म ... ...